Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

रवीन्द्रनाथ का राष्ट्रवाद:'गोरा' और 'घरे बाहिरे' उपन्यास के संदर्भ में

डॉ. उर्वी ए. भावसार
वी. एन. एस. बी. आर्ट्स एन्डकॉमर्स कॉलेज,वडनगर

"Nationalism is an organized self-interest of the whole people and the organization of politics and commerce for selfish ends and an organized power for exploitation."

-Ravindranath Tagore

'मैं भारत में पुनः और पुनः जन्म लूँगा, उसकी समस्त दरिद्रता, दु:ख और दीनता के साथ में भारतवर्ष से सर्वाधिक प्रेम करता हूँ।'

-रवीन्द्रनाथ टैगोर

'देश की सेवा करने को मैं तैयार हूँ। परन्तु वन्दन तो उस सत्य को ही करूँगा जो देश से कहीं अधिक उँचे आसान पर विराजमान है। अगर मैं देश को देव मानकर उसकी आराधना करूँगा तो मैं देश का ही अहित करूँगा। जब-जब आप देश को देव मना कर अन्याय को कर्तव्य और अधर्म को धर्म कह कर उसका स्वीकार करने की बात करते हैं तब-तब मेरे ह्रदय को ठेस पहुँचती है। देश से भी उच्च आसन पर धर्म बिराजमान है इस सत्य का जो लोग स्वीकार नहीं करते है, मैं कहता हूँ की वो लोग देश का भी स्वीकार नहीं करते हैं। अगर इस प्रमत्तता में से हम अपने देश को न बचा सके तो देश की पूजा ही इस देश का विष नैवेध बन जायेगी और देश का कार्य विमुख ब्रम्हास्त्र की भाँति देश के ह्रदय में घुस कर उसे घायल कर देगा।'

अखंड भारत के सच्चे चाहक और जन गण मन के रचयिता रवीन्द्रनाथ के उपर्युक्त तीनों विधान उनके राष्ट्रवाद को समझने की चाबी है। रवीन्द्रनाथ समर्थ उपन्यासकार, कहानीकार, चित्रकार, संगीतकार, गीतकार एवं नवभारत के प्रमुख निर्माताओं में से एक है। शान्तिनिकेतन और विश्वभारती जैसी संस्थाओं के द्वारा उन्होंने भारतीय शिक्षण पद्धति में क्रान्ति ला दी। वाल्मिकी, व्यास और कालिदास के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी है गुरूदेव रवीन्द्रनाथ। उनकी क्रान्त द्रष्टि उग्र राष्ट्रवाद के गंभीर परिणाम पहले ही देख चुकी थी। भारत माँ को सच्चे ह्रदय से भक्ति करनेवाले रवीन्द्रनाथ की यह भक्ति किसी स्वार्थ या अंगत लिप्सा से दूषित नहीं थी। वे जानते थे की राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रवाद के नाम पर कई लोग अपना उल्लू सीधा करते हैं। उन्हों ने घरे-बाहिरे उपन्यास में संदीप के पात्र द्वारा इसी सत्य को उजागर किया है। रावण की पूजा करनेवाला संदीप कहता है,

"देश में जन्म लेने से देश मेरा नहीं बन जाता है। किन्तु जिस दिन में बलात्कार अपना बना लूँगा उस दिन ही यह देश मेरा होगा। लोभ करना स्वाभाविक है"

वर्तमान विश्व की- सन् २०१७-१८ बात करे तो इस उग्र राष्ट्रवाद ने पूरे विश्व में एक भय का वातावरण बना दिया है। अमरीका के राष्ट्रप्रमुख डॉनाल्ड ट्रम्प की राजनीति या यूरोपीय संगठन में से ब्रिटन का मुक्त होना और हाल ही में हुए गुजरात के अनामत

आँदोलन और 'पद्मावत' फिल्म के विरोध में चार राज्यों में हुई तोड़फोड़ को देखे तो लगता है कि ये सभी संदीप के ही नये रूप है। रवीन्द्रनाथ की राष्ट्रभक्ति इस सत्य को जान चूकी थी कि किसी भी राष्ट्र में अगर सत्य की जगह राष्ट्र की ही आराधना होने लगी तो वह राष्ट्र की आराधना क्रमशः व्यक्तिपूजा में परिवर्तित हो जायेगी। उनका यह मानना था कि देशभक्ति एक ऐसी सुकुमार भावना है जो व्यक्ति के स्वच्छ ह्रदय में से अनायास उठती है। देशभक्ति फिल्म शुरू होने से पहले थियेटर में राष्ट्रगीत सुना कर पैदा नहीं की जा सकती और ना ही बस या बाईक जला कर देश के स्वाभिमान की रक्षा की जा सकती है।

'घरे-बाहिरे' उपन्यास में सन् १९१६ मे इस सत्य को रवीन्द्रनाथ ने दिखलाया था। संदीप, निखिल और विमला- इन तीनों प्रमुख पात्रों के माध्यम से गुरूदेव ने सच्ची राष्ट्रभक्ति, स्वार्थ और लोभ से दूषित दंभी राष्ट्रभक्ति तथा नारी की स्वतंत्रता एवं उसकी राष्ट्र के नवसर्जन में उपयोगिता जैसी बातों को उजागर किया है। जागीरदार निखिल का यह मानना है कि सब से उपर कालजयी सत्य ही रहता है और राष्ट्र हित के ही कार्य के लिए भी अधर्म को धर्म कहना या अन्याय को न्याय कहना राष्ट्र का ही अहित करना है। गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन में रवीन्द्रनाथ ने भी हिस्सा लिया था। लेकिन वे बहुत पहले ही इसके कुपरिणाम जान गये और उन्हों ने उस आंदोलन में से निवृत्ति ले ली। 'घरे-बाहिरे' उपन्यास इसी स्वानुभव का नीचोड़ है। निखिल का मानना है कि अगर हम स्वदेशी आंदोलन की बात करतें हैं तो हमें पहले देश में उद्योंगों की स्थापना करनी चाहिए। स्वदेशी उत्पादन बढ़ाना चाहिए और उसे कम कीमत पर देश के व्यापारी बेच सके ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। बलात्कार से किसी व्यापारी की दुकान में से विदेशी माल को लूँट लेना और फिर देश भक्ति के नाम पर उस व्यापारी के सामने ही उसके माल और दुकान को जला देना और इसी में राष्ट्र का उद्धार मानना यह कायरता है। यही नपुंसकता है और इस तरह हम देश का उद्धार नहीं कर रहें है परंतु देशवासियों के साथ-साथ देश का भी अहित ही करते हैं।

संदीप निखिल के इस द्रष्टिकोण का विरोध करता है। उसका मानना है कि, "देशभक्ति भय से ही प्रजा के ह्रदय में जन्म ले सकती है। अगर देश का नवनिर्माण करना है तो उसके लिए पाषाण ह्रदय बनना ही होगा।"

लेकिन संदीप के इस वचन में छल है, कपट है। ऐसे नेता देश को देव या देवी बताकर खुद उसके पूजारी बन कर बैठ जाते हैं और उस के बाद खुद को ही देवता घोषित कर देते है। इतिहासकार जानते है की जर्मनी में हिटलर ने यही किया था और इटली में मुसोलिनी ने कुछ ऐसा ही किया था। सच पूछिये तो ऐसे देवताओं से भरा पड़ा है जिन्हों ने क्रान्ति के, राष्ट्रभक्ति के नाम पर अन्त में केवल देश को एक खिलौना बनाकर रख दिया हो। और बाद में वे उससे जैसा चाहे, जब चाहे खेलते रहे हैं।

रवीन्द्रनाथ के 'गोरा' उपन्यास में उनके मानवतावादी राष्ट्रवाद का चित्र सामने आता है। भिन्न-भिन्न भाषायें, भिन्न-भिन्न संस्कृति, भिन्न-भिन्न लोग एवं रीति-रिवाज़ के बावजूद भी भारत एक है इसकी वजह सनातन भारतीय संस्कृति का वह प्रवाह है जो हरेक को अपना लेता है। 'गोरा' उपन्यास इस भारतीयता का, रवीन्द्रनाथ की राष्ट्रभक्ति का हमें दर्शन कराता है।

'गोरा' उपन्यास का नायक आनन्दमयी को कहता है,

"माँ, तुम्ही मेरी माँ हो। जिस माँ को मैं खोजता फिर रहा था वह तो यहीं मेरे कमरे में बैठी हुई थी। तुम्हारी जात नहीं है, तुम ऊँच-नीच का विचार नहीं करती, धृणा नहीं करती- तुम केवल कल्याण की प्रतिमा हो। तुम मेरा भारतवर्ष हो।"

इसी उपन्यास में सत्य का दर्शन होने के बाद नायक गोरा परेश बाबु को जो कहता है वह रवीन्द्रनाथ की मानवतावादी राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रकट करता है।

'वह यों एकाएक मेरी सारी अपवित्रता को समूल मिटा देंगे, यह मैं स्वप्न में भी नहीं जानता था। आज मैं ऐसा पवित्र हो गया हूँ कि चाँड़ाल के घर भी अब मुझे अपवित्रता का डर न रहा। परेश बाबु, आज सवेरे ही बिलकुल खुले मन से मैं ठीक भारतवर्ष की गोद में आ बैठा हूँ।'

उनका मानना था, आदर्श रूप में वह राष्ट्रवाद जो कि किसी जनता के सामूहिक आत्म हितों की अभिव्यक्ति के लिए खड़ा होता है, यदि वह अपनी सच्ची सीमाओं को बनाये रखता है तो उसे अपने लिए लज्जित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार आत्म हित और आत्माभिव्यक्ति तथा स्वधर्मपालन की सीमाओं में राष्ट्रवाद सर्वथा उचित है। ऐसा न होने पर वह एक संकीर्ण धारणा, एक व्यवसाय, एक रचनात्मक नहीं बल्कि विनाशात्मक आदर्श आदर्श बन जाता है। इस प्रकार रवीन्द्रनाथ का राष्ट्रवादी चिंतन मानवतावादी है। उनकी विचारधारा में राष्ट्रभक्ति का मूल्य है परन्तु वह उग्र राष्ट्रवाद के प्रबल विरोधी है। उनके राष्ट्रवाद को समझने के लिए तथा व्यक्ति, समाज एवं राज्य के प्रति उनके विचारों को जानने के लिए यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि रवीन्द्रनाथ मानवता और सत्य के उपासक है। उनका यह द्रष्टिकोण 'गोरा' और 'घरे-बाहिरे' उपन्यासों में कलात्मक रूप से उभर कर सामने आता है। और इसी लिए हम कह सकते हैं कि इन दोनों उपन्यासों के द्वारा रवीन्द्रनाथ के राष्ट्रवादी विचारों को सरलता से समझा जा सकता है। केवल इतना ही नहीं वर्तमान विश्व में उनके यह विचार उतने ही प्रस्तुत हैं।

संदर्भ ग्रंथ :-

१.'गोरा'- रवीन्द्रनाथ टैगोर, साहित्य अकादमी

२.'घरे-बाहिरे'- रवीन्द्रनाथ टैगोर, साहित्य अकादमी

३.'भारतीय राजनीतिक चिन्तक रवीन्द्रनाथ टैगोर'- मनोजकुमार सिंह, शैलेषकुमार चौधरी, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस

४.'पाश्चात्य राजनीतिक विचारक और विचारधाराएँ'- उपेन्द्र सिंह, साहित्यागार